

खिड़की स्त्री. (देश) 1. मकान, रेल, जहाज आदि में हवा और रोशनी आने के लिए बनाया हुआ छोटा दरवाजा, झरोखा, वातायन 2. किले या नगर का चोर दरवाजा 3. खिड़की की तरह खुला हुआ कोई स्थान जैसे- खिड़कीदार अंगरखा, खिड़कीदार पगड़ी मुहा. खिड़की निकालना- खिड़की बनाना।

खिड़कीबंद वि. (देश.+फा.) वह मकान जो एक ही किराएदार द्वारा पूरा लिया गया हो 2. यथेष्ट खिड़कियों वाला मकान।

खिताब पुं. (अर.) 1. पदवी, उपाधि 2. मुखातिब होना, किसी की ओर मुँह करके बातचीत करना।

खिताबी वि. (अर.) जिसे खिताब मिला हो।

खित्ता पुं. (अर.) भूखंड, प्रदेश, क्षेत्र, इलाका।

खिदमत स्त्री. (अर.) सेवा टहल, सुश्रूषा 2. दासता, नौकरी।

खिदमतगार पुं. (फा.) सेवक, खिदमत करने वाला, नौकर, टहलुआ 2. दास।

खिदमती वि. (अर.) 1. खिदमत करने वाला 2. खिदमत के बदले में प्राप्त जागीरी।

खिदान पुं. (अर.) दे. ख्याल।

खिदिर पुं. (तत्.) 1. चंद्रमा 2. तपस्वी 2. दीन 4. इंद्र।

खिद्र पुं. (तत्.) 1. सिंह के रहने की माँद, आड़, पर्दा 2. व्याधि, रोग 3. दरिद्रता, गरीबी।

खिन (छिन-क्षण) पुं. (तद्.) क्षण, लमहा।

खिन्न वि. (तत्.) 1. अप्रसन्न, असंतुष्ट 2. असहाय, दीन-हीन 3. चिंतित।

खियाबों पुं. (फा.) 1. उद्यान, बाग, पौधों की क्यारी।

खिरका पुं. (अर.) गुदड़ी, कंथा, पुराना कपड़ा।

खिरद स्त्री. (फा.) बुद्धि, मेधा, अकल।

खिरदमंद वि. (फा.) बुद्धिमान, मेधावी, मनीषी, अकलमंद।

खिरनी स्त्री. (तद्.) 1. एक प्रकार का सदाबहार, छायादर ऊँचा पेड़ 2. एक प्रकार का चावल।

खिरमन पुं. (फा.) 1. खलियान, अंबार 2. फसल।

खिरस पुं. (फा.) रीछ, भालू।

खिराज पुं. (अर.) राजस्व, कर, मालगुजारी।

खिराम पुं. (फा.) मस्त चाल, धीमी चाल, भटकन संदर्श चाल।

खिरामों वि. (फा.) खिरामावाले, मस्ती की चाल वाले, भटका, नाज नखरे के साथ चलने वाला।

खिरैटी स्त्री. (देश.) गोल पत्तों तथा सफेद फलों वाला एक पौधा।

खिलंदरा वि. (देश.) खिलाड़ी।

खिल पुं. (तत्.) 1. ऊसर धरती, रेतीली भूमि 2. रिक्त स्थान, खाली स्थान 3. परिशिष्ट 4. संकलन 5. शून्यता, खालीपन 6. शेष भाग, शेषांश 7. ब्रह्मा 8. विष्णु।

खिलअत स्त्री. (अर.) जोड़ा पोशाक, वह पहनावा जो राजा या बादशाह किसी को सम्मानार्थ प्रदान करे।

खिलकत स्त्री. (अर.) 1. संसार, सृष्टि 2. भीड़ बहुत से लोगों का समूह।

खिलखिलाना अ.क्रि. (अनु.) आवाज के साथ खुलकर हँसना, कहकहा लगाना, अट्टहास करना।

खिलखिलाहट स्त्री. (देश.) खिल-खिलाकर हँसने का भाव।

खिलजी पुं. (देश.) पठानों की एक जाति, हिंदुस्तान का एक पठान राजवंश।

खिलना अ.क्रि. (देश.) 1. कली का विकसित होना, फूल बनना। प्रयो. चलने का संबल लेकर दीपक पंतग से मिलता, जलने की दीन दशा में वह फूल सदृश है खिलता 2. प्रसन्न होना, प्रमुदित होना 3. शोभित होना, उपयुक्त होना या उचित जँचना 4. बीच से फट जाना 5. अलग-अलग हो जाना